

परमेश्वर के वचन पर व्यापक बाइबिल अध्ययन

प्रस्तावना: परमेश्वर के वचन का मूलभूत महत्व

परमेश्वर का वचन आस्था का केंद्र है, जो मानवता के लिए परमेश्वर के प्रकाशन का स्रोत है। इसे स्वीकार करने से बाइबिल की पूर्णता और अधिकार में विश्वास बढ़ता है और आज्ञाकारिता को बढ़ावा मिलता है, जिससे यह ईसाई बनने का आधार बनता है। इसमें परमेश्वर के मौखिक आदेश, भविष्यवाणियाँ, यीशु मसीह का व्यक्तित्व और लिखित धर्मग्रंथ शामिल हैं, जो पुराने और नए नियम दोनों को समाहित करते हैं।

- इब्रानियों 4:12-13 (एनआईवी): **क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित और सक्रिय है। यह दोधारी तलवार से भी तेज है, यह आत्मा और मन, जोड़ों और मज्जा तक को भेद सकता है; यह हृदय के विचारों और मनोभावों का न्याय करता है। सारी सृष्टि में कुछ भी परमेश्वर की दृष्टि से छिपा नहीं है। सब कुछ उसके सामने खुला और स्पष्ट है, जिसके समक्ष हमें हिसाब देना है।**
 - व्याख्या: वचन (यूनानी: लोगोस, दिव्य अभिव्यक्ति) सजीव (प्रासंगिक) और सक्रिय (गतिशील) है, जो आध्यात्मिक शल्य चिकित्सा करता है और पाप और सत्य को उजागर करता है, जो भले ही **तकलीफ**; दे, लेकिन चंगाई की ओर ले जाता है। यह छिपे हुए विचारों को प्रकट करता है और सभी को जवाबदेह ठहराता है, विश्वासियों को इसकी चुनौतियों से पीछे न हटने के लिए प्रेरित करता है।
- 1 तीमुथियुस 4:16 (एनआईवी): **अपने जीवन और शिक्षा पर ध्यान रखो। उनमें दृढ़ रहो, क्योंकि यदि तुम ऐसा करोगे, तो तुम अपने आप को और अपने सुनने वालों को बचा लोगे।**
 - स्पष्टीकरण: मोक्ष के लिए जीवन (आचरण) और सिद्धांत (शिक्षा) दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। विभिन्न व्याख्याओं से यह प्रश्न उठता है: इतने सारे मत क्यों? त्रुटि से बचने के लिए सही शिक्षा में दृढ़ता आवश्यक है।
- 2 तिमोथी 3:16-17 (एनआईवी): **सारा पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है और शिक्षा देने, डांटने, सुधारने और धार्मिकता में प्रशिक्षण देने के लिए उपयोगी है, ताकि परमेश्वर का सेवक हर अच्छे काम के लिए पूरी तरह से तैयार हो सके।**
 - स्पष्टीकरण: पवित्रशास्त्र ईश्वरीय प्रेरणा से लिखा गया है (ग्रीक: थियोप्यूस्टोस, ईश्वर द्वारा प्रेरित) और व्यावहारिक है, जो विश्वासियों को हर अच्छे कार्य के लिए तैयार करता है। सभी इसे स्वीकार नहीं करेंगे, लेकिन यह आध्यात्मिक परिपक्वता के लिए आवश्यक सभी चीजें प्रदान करता है।
- यूहन्ना 12:47-48 (एनआईवी): **यदि कोई मेरे वचन सुनता है, परन्तु उनका पालन नहीं करता, तो मैं उस व्यक्ति का न्याय नहीं करता। क्योंकि मैं जगत का न्याय करने नहीं, बल्कि जगत को बचाने आया हूँ। जो मुझे ठुकराता है और मेरे वचन नहीं मानता, उसके लिए एक न्यायी है; मेरे कहे हुए वचन ही अंत के दिन उसे दोषी ठहराएँगे।**
 - स्पष्टीकरण: यीशु के वचनों (ग्रीक: रहमा, बोले गए शब्द) को अस्वीकार करना, उन्हें और उद्धार को अस्वीकार करना है। ईश्वर उदारतापूर्वक न्याय के मानदंड को प्रकट करते हैं, जैसे पहले से ही परीक्षा दे दी गई हो, ताकि असफलता का कोई बहाना न रहे।
- प्रेरितों 17:10-11 (एनआईवी): **जैसे ही रात हुई, विश्वासियों ने पौलुस और सिलास को बेरिया भेज दिया। वहाँ पहुँचकर वे यहूदी आराधनालय में गए। बेरिया के यहूदी थिस्सलनीका के यहूदियों से कहीं अधिक नेक स्वभाव के थे, क्योंकि उन्होंने बड़े उत्साह से संदेश ग्रहण किया और पौलुस की कही हुई बात की सच्चाई जानने के लिए प्रतिदिन पवित्रशास्त्र की जाँच करते थे।**
 - स्पष्टीकरण: बेरियाई लोगों की नेक प्रतिक्रिया—जिज्ञासापूर्वक पवित्रशास्त्र को ग्रहण करना और प्रतिदिन उसकी जांच करना—एक आदर्श प्रस्तुत करती है: उत्साहपूर्वक पढ़ें, प्रश्न पूछें और बाइबिल के आधार पर शिक्षाओं की पुष्टि करें।

सृष्टि, इतिहास और भविष्यवाणी में परमेश्वर का वचन (पुराने नियम पर केंद्रित)

पुराने नियम में, **वचन**; (हिब्रू: दबार, वाणी और क्रिया) ईश्वर का प्रत्यक्ष वाणी या आदेश है, जो सृजन करता है, मार्गदर्शन करता है, न्याय करता है और भविष्यवाणी करता है। यह सक्रिय, आधिकारिक और जीवनदायी है।

- उत्पत्ति 1:3 (एनआईवी): □□□□; और परमेश्वर ने कहा, □#39;प्रकाश हो,□#39; और प्रकाश हो गया।□□□□; (उत्पत्ति 1:6, 9, 11 आदि में दोहराया गया है)
- स्पष्टीकरण: ईश्वर का वचन तुरंत सृजन करता है, जो उसकी सृजनात्मक शक्ति को दर्शाता है।
- भजन संहिता 33:6 (एनआईवी): □□□□; यहोवा के वचन से आकाश बना, और उसके मुख की सांस से तारों का समूह बना।□□□□;
- स्पष्टीकरण: ईश्वर की श्वास से जुड़ा शब्द ही ब्रह्मांड का निर्माण करता है।
- भजन संहिता 148:5 (एनआईवी): □□□□; वे यहोवा के नाम की स्तुति करें, क्योंकि उसी के आदेश से उनकी सृष्टि की रचना हुई।□□□□;
- स्पष्टीकरण: सृष्टि ईश्वर की स्तुति करती है क्योंकि उनके वचन ने ही इसे अस्तित्व में लाया है।
- यशायाह 55:11 (एनआईवी): □□□□; जो वचन मेरे मुख से निकलता है, वह ऐसा ही है: वह मेरे पास व्यर्थ नहीं लौटेगा, परन्तु मेरी इच्छा पूरी करेगा और उस उद्देश्य को प्राप्त करेगा जिसके लिए मैंने उसे भेजा है।□□□□;
- स्पष्टीकरण: ईश्वर का वचन हमेशा अपने उद्देश्य की पूर्ति करता है, चाहे वह सृजन हो, मार्गदर्शन हो या न्याय।
- निर्गमन 20:1 (एनआईवी): □□□□; और परमेश्वर ने ये सब बातें कहीं।□□□□;
- स्पष्टीकरण: दस आज्ञाओं का परिचय देता है, और वचन को वाचा संबंधी मार्गदर्शन के रूप में दर्शाता है।
- व्यवस्थाविवरण 8:3 (एनआईवी): □□□□; उसने तुम्हें दीन बनाया, तुम्हें भूखा रखा और फिर तुम्हें मन्ना खिलाया... ताकि तुम्हें यह सिखाया जा सके कि मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं जीता, बल्कि यहोवा के मुख से निकलने वाले प्रत्येक वचन से जीता है।□□□□;
- स्पष्टीकरण: ईश्वर का वचन भौतिक आवश्यकताओं से परे आध्यात्मिक जीवन को बनाए रखता है।
- यहोशू 1:8 (एनआईवी): □□□□; व्यवस्था की इस पुस्तक को सदा अपने होठों पर रखो; दिन-रात इस पर मनन करो, ताकि तुम इसमें लिखी हर बात का पालन करने में सावधान रहो। तब तुम समृद्ध और सफल होगे।□□□□;
- स्पष्टीकरण: लिखित वचन पर ध्यान करने से आज्ञापालन और सफलता सुनिश्चित होती है।
- यिर्मयाह 1:4 (एनआईवी): □□□□; यहोवा का वचन मेरे पास आया और उसने कहा।□□□□;
- स्पष्टीकरण: भविष्यसूचक रहस्योद्घाटन ईश्वर का संदेश पहुंचाता है।
- यहेजकेल 1:3 (एनआईवी): □□□□; यहोवा का वचन बाबुलियों के देश में केबार नदी के किनारे बूजी के पुत्र याजक यहेजकेल के पास आया। वहाँ यहोवा का हाथ उस पर था।□□□□;
- स्पष्टीकरण: ईश्वर का वचन भविष्यवक्ताओं को प्रचार-प्रसार के लिए निर्देशित करता है।
- 1 शमूएल 3:1 (एनआईवी): □□□□; बालक शमूएल एली के अधीन यहोवा के सामने सेवा करता था। उन दिनों यहोवा का वचन दुर्लभ था; दर्शन बहुत कम होते थे।□□□□;
- स्पष्टीकरण: इस शब्द की दुर्लभता ने इसे अनमोल बना दिया।
- 1 राजा 17:2 (एनआईवी): □□□□; तब यहोवा का वचन एलियाह के पास आया।□□□□;
- स्पष्टीकरण: यह भविष्यसूचक सेवकाई का मार्गदर्शन करता है।
- यशायाह 40:8 (एनआईवी): □□□□; घास सूख जाती है और फूल मुरझा जाते हैं, परन्तु हमारे परमेश्वर का वचन सदा बना रहता है।□□□□;
- स्पष्टीकरण: वचन शाश्वत है, सृष्टि से भी अधिक समय तक विद्यमान है।
- आमोस 3:1 (एनआईवी): □□□□; हे इस्राएल के लोगों, यह वचन सुनो, यह वह वचन है जो यहोवा ने तुम्हारे विरुद्ध—उस पूरे परिवार के विरुद्ध कहा है जिसे मैं मिस्र से बाहर लाया हूँ।□□□□;
- स्पष्टीकरण: यह निर्णय लेने और ध्यान आकर्षित करने की मांग करता है।
- भजन संहिता 107:20 (एनआईवी): □□□□; उसने अपना वचन भेजा और उन्हें चंगा किया; उसने उन्हें कन्न से बचाया।□□□□;
- स्पष्टीकरण: वचन चंगा करता है और उद्धार देता है।

ऐतिहासिक संदर्भ (प्रेरितों के काम 7:1-38): प्रेरितों के काम 7 में इतिहास के माध्यम से परमेश्वर के वचन का वर्णन किया गया है: परमेश्वर ने अब्राहम को बुलाया (पद 1-8), याकूब को मिस्र ले गया (पद 9-16), इस्राएल को दासता से छुड़ाने के लिए मूसा को खड़ा किया (पद 17-29), और मूसा के द्वारा जीवित वचन (पद 38) दिए। ये पाँच पुस्तकें (उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण) यहूदी धर्म के पवित्र ग्रंथों के रूप में स्वीकृत इब्रानी/अरामी भाषा में लिखी गईं (1400-400 ईसा पूर्व)। सदियों से, भविष्यवक्ताओं ने प्रेरित लेख जोड़कर व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की रचना की।

देहधारी यीशु मसीह के रूप में परमेश्वर का वचन (नए नियम की पूर्ति)

नए नियम में, वचन (लोगोस, दिव्य अभिव्यक्ति) यीशु में साकार रूप धारण करता है, जो पुराने नियम की प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है और ईश्वर के रहस्योद्घाटन को मूर्त रूप देता है।

- यूहन्ना 1:1-3, 14 (एनआईवी): आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। वह आदि में परमेश्वर के साथ था। उसी के द्वारा सब कुछ सृजित हुआ; उसके बिना कुछ भी सृजित नहीं हुआ जो सृजित हुआ है... वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच रहने लगा। हमने उसकी महिमा देखी है, इकलौते पुत्र की महिमा, जो पिता से आया, अनुग्रह और सत्य से परिपूर्ण।
 - स्पष्टीकरण: यीशु दिव्य, सृजनात्मक वचन (लोगोस) है, जो उत्पत्ति की सृष्टि से जुड़ता है और ईश्वर को प्रकट करता है (यूहन्ना 1:18: कसि ने कभी ईश्वर को नहीं देखा, परन्तु एकमात्र पुत्र, जो स्वयं ईश्वर है और पिता के साथ घनिष्ठतम संबंध में है, ने उसे प्रकट किया है।)
- यूहन्ना 5:39-40 (एनआईवी): तुम शास्त्रों का गहन अध्ययन करते हो, क्योंकि तुम सोचते हो कि उनमें अनन्त जीवन है। ये वही शास्त्र हैं जो मेरे विषय में गवाही देते हैं, फिर भी तुम जीवन पाने के लिए मेरे पास आने से इनकार करते हो।
 - स्पष्टीकरण: पवित्रशास्त्र अनन्त जीवन के लिए यीशु की ओर इशारा करते हैं।
- प्रकाशितवाक्य 19:13 (एनआईवी): वह लहू में डूबे हुए वस्त्र पहने हुए है, और उसका नाम परमेश्वर का वचन है।
 - स्पष्टीकरण: वचन के रूप में यीशु का नाम न्याय में उनके अधिकार को दर्शाता है।
- लूका 24:27, 44-49 (एनआईवी): और उसने मूसा और सभी नबियों से शुरू करके उन्हें समझाया कि समस्त शास्त्रों में उसके विषय में क्या लिखा है... उसने उनसे कहा, जब मैं तुम्हारे साथ था, तब मैंने तुमसे यही कहा था: मूसा की व्यवस्था, नबियों और भजन संहिता में मेरे विषय में जो कुछ लिखा है, वह सब पूरा होना चाहिए। तब उसने उनके मन खोल दिए ताकि वे शास्त्रों को समझ सकें... उसके नाम से सभी राष्ट्रों में पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप का प्रचार किया जाएगा।
 - स्पष्टीकरण: यीशु पुराने नियम की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं और प्रेरितों को अपने संदेश का प्रचार करने के लिए तैयार करते हैं, जिससे उनके मन इसके अर्थ को समझने के लिए खुल जाते हैं।
- यूहन्ना 8:31-32 (एनआईवी): यीशु ने उन यहूदियों से, जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, कहा, यदि तुम मेरी शिक्षाओं का पालन करोगे, तो तुम वास्तव में मेरे शिष्य हो। तब तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।
 - स्पष्टीकरण: यीशु के वचन (लोगोस) में बने रहने से शिष्यत्व और स्वतंत्रता प्राप्त होती है।
- यूहन्ना 15:3 (एनआईवी): जो वचन मैंने तुमसे कहा है, उसके कारण तुम पहले ही शुद्ध हो चुके हो।
 - स्पष्टीकरण: यीशु का वचन (लोगोस) विश्वासियों को शुद्ध करता है।
- इब्रानियों 1:1-3 (एनआईवी): पहले समय में परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों से अनेक बार और अनेक तरीकों से भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें कीं, परन्तु इन अंतिम दिनों में उसने हमसे अपने पुत्र के द्वारा बातें की हैं, जिसे उसने सब वस्तुओं का वारिस नियुक्त किया है, और जिसके द्वारा उसने ब्रह्मांड की रचना की है। पुत्र परमेश्वर की महिमा का प्रकाश और उसके स्वरूप का साक्षात् रूप है, जो अपने सामर्थ्यपूर्ण वचन से सब वस्तुओं को धारण रखता है।
 - स्पष्टीकरण: ईश्वर अपने पुत्र के माध्यम से बोलते हैं, जो अपने वचन (रेमा, मौखिक आदेश) द्वारा सृष्टि को बनाए रखते हैं।

मिश्रित विषय: यीशु व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं की पूर्ति करते हैं (मरकुस 12:28-34: अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करो... और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो), और कर्मकांडीय नियमों (कुलुस्सियों 2:16-17: ये आने वाली चीजों की छाया मात्र हैं; परन्तु वास्तविकता तो मसीह में पाई जाती है) को वास्तविकता के रूप में प्रतिस्थापित करते हैं। (नोट: मूल दस्तावेज़ में दृश्य स्पष्टता के लिए चित्र शामिल हैं, जो संभवतः पूर्ति या आज्ञाओं के आरेख हैं।)

लिखित शब्द: प्रेरणा, अधिकार और व्यावहारिक उपयोग

बाइबल ईश्वरीय प्रेरणा से लिखी गई है, प्रामाणिक है और परिवर्तनकारी है, जो विश्वासियों का मार्गदर्शन करती है और सिद्धांतों को आकार देती है।

- 2 पतरस 1:20-21 (एनआईवी): □□□□;सबसे पहले, आपको यह समझना चाहिए कि पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी भविष्यवक्ता की अपनी व्याख्या से नहीं हुई। क्योंकि भविष्यवाणी कभी भी मनुष्य की इच्छा से उत्पन्न नहीं हुई, बल्कि भविष्यवक्ता, यद्यपि मनुष्य थे, पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित होकर परमेश्वर की ओर से बोले।□□□□;
 - स्पष्टीकरण: पवित्र शास्त्र की उत्पत्ति पवित्र आत्मा से होती है, न कि मानवीय इच्छा से।
- भजन संहिता 119:105 (एनआईवी): □□□□;आपका वचन मेरे पैरों के लिए दीपक है, मेरे मार्ग के लिए प्रकाश है।□□□□;
 - स्पष्टीकरण: वचन (द्वार) दैनिक जीवन का मार्गदर्शन करता है (भजन संहिता 119 में 170 से अधिक छंदों में इसे कानून, नियम आदि के रूप में महिमामंडित किया गया है)।
- रोमियों 15:4 (एनआईवी): □□□□;क्योंकि जो कुछ पहले लिखा गया था, वह हमें सिखाने के लिए लिखा गया था, ताकि शास्त्रों में सिखाई गई धीरज और उनसे मिलने वाले प्रोत्साहन के द्वारा हमें आशा मिले।□□□□;
 - स्पष्टीकरण: पुराना नियम शिक्षा देता है और आशा प्रदान करता है।
- गलतियों 3:8 (एनआईवी): □□□□;शास्त्र में पहले से ही यह बात लिखी थी कि परमेश्वर विश्वास के द्वारा अन्यजातियों को धर्मी ठहराएगा, और उसने इब्राहीम को पहले ही सुसमाचार सुना दिया था: □#39;सब जातियाँ तुम्हारे द्वारा आशीष पाएँगी।□#39;□□□□;
 - स्पष्टीकरण: पवित्रशास्त्र विश्वास के द्वारा उद्धार की भविष्यवाणी करता है।
- 1 थिस्सलनीकियों 2:13 (एनआईवी): □□□□;और हम निरंतर परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं, क्योंकि जब तुमने परमेश्वर का वचन, जो तुमने हमसे सुना, ग्रहण किया, तो तुमने उसे मनुष्य का वचन नहीं, बल्कि वास्तव में परमेश्वर का वचन माना, जो तुम विश्वास करने वालों में काम करता है।□□□□;
 - स्पष्टीकरण: प्रचारित वचन (लोगोस) विश्वासियों को रूपांतरित करता है।
- याकूब 1:21 (एनआईवी): □□□□;इसलिए, सभी नैतिक अशुद्धियों और उस बुराई से छुटकारा पाओ जो इतनी प्रचलित है और नम्रता से उस वचन को स्वीकार करो जो तुम में बोया गया है, जो तुम्हें बचा सकता है।□□□□;
 - स्पष्टीकरण: रोपित वचन (लोगोस) विनम्रतापूर्वक ग्रहण किए जाने पर उद्धार प्रदान करता है।
- 2 तिमोथी 3:16-17 (एनआईवी) (ज़ोर देने के लिए दोहराया गया): □□□□;सारा पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है और शिक्षा देने, डांटने, सुधारने और धार्मिकता में प्रशिक्षण देने के लिए उपयोगी है, ताकि परमेश्वर का सेवक हर अच्छे काम के लिए पूरी तरह से तैयार हो सके।□□□□;
 - स्पष्टीकरण: पवित्रशास्त्र एक अभिभावक की तरह प्रशिक्षण देता है, शिक्षा, सुधार और धार्मिकता के माध्यम से परिपक्वता को बढ़ावा देता है।

अलग-अलग व्याख्याओं के कारण:

- अज्ञानता (मत्ती 22:29: □□□□;तुम गलती में हो क्योंकि तुम पवित्रशास्त्र और परमेश्वर की शक्ति को नहीं जानते□□□□;; होशे 4:6: □□□□;मेरे लोग ज्ञान की कमी के कारण नष्ट हो गए हैं□□□□;))।
- व्यक्तित्व पूजा (1 कुरिन्थियों 1:12: □□□□;तुम में से एक कहता है, □#39;मैं पौलुस का अनुसरण करता हूँ□#39;; दूसरा कहता है, □#39;मैं अपोलोस का अनुसरण करता हूँ□#39;;...□□□□;; प्रेरितों के काम 20:30: □□□□;लोग उठेंगे और सत्य को विकृत कर देंगे□□□□;))।
- शास्त्रों को तोड़-मरोड़ कर पेश करना (2 पतरस 3:16: □□□□;अज्ञानी और अस्थिर लोग इसे तोड़-मरोड़ कर पेश करते हैं, जैसे वे अन्य शास्त्रों को करते हैं□□□□;; उत्पत्ति 3:1: □□□□;क्या परमेश्वर ने सचमुच ऐसा कहा था...□□□□;))।
- व्यक्तिगत सुविधा (2 तिमोथी 4:3: □□□□;वे अपनी इच्छाओं के अनुरूप सही शिक्षा को सहन नहीं करेंगे...□□□□;; यशायाह 30:10-11: मीठी बातों की चाहत रखते हैं)।

- मानवीय परंपराएँ (मरकुस 7:6-9: □□□□; तुम अपनी परंपरा के खातिर परमेश्वर के वचन को व्यर्थ कर देते हो □□□□; कुलुस्सियों 2:8: □□□□; खोखली और भ्रामक दर्शनशास्त्र... मानवीय परंपरा □□□□; मत्ती 15:6-9)।
- अतिरिक्त बातें (नीतिवचन 30:6: □□□□; उसके शब्दों में कुछ मत जोड़ो, नहीं तो वह तुम्हें डांटेगा □□□□; प्रकाशितवाक्य 22:18; व्यवस्थाविवरण 4:2, 12:32; 1 कुरिन्थियों 4:6)।
- आज्ञा मानने की अनिच्छा (यूहन्ना 7:17: □□□□; जो कोई परमेश्वर की इच्छा पूरी करना चाहेगा, उसे पता चल जाएगा कि मेरी शिक्षा परमेश्वर की ओर से है या नहीं □□□□; यूहन्ना 8:31-32)।

स्पष्टीकरण: गलती मनुष्य की है, ईश्वर की नहीं—पवित्र शास्त्र मूलभूत सिद्धांतों पर स्पष्ट है। गलत सिद्धांत (जैसे, चमत्कार/आश्चर्य, स्वास्थ्य/धन, अंत समय की अटकलें, गलातियों की पुस्तक के विपरीत मसीहाई यहूदी धर्म, केवल विश्वास को अतिप्रतिक्रिया मानना) आध्यात्मिक रूप से हानिकारक भोजन के समान हैं, जो सही सिद्धांतों (स्वस्थ शिक्षा) की तुलना में अस्वास्थ्यकर हैं। प्रस्थान के लिए संक्षिप्त रूप: आसान रास्ता (2 तीमुथियुस 4:2-3; यशायाह 30:10-11; यूहन्ना 8:31-32), अतिरिक्त शिक्षाएँ (नीतिवचन 30:6; व्यवस्थाविवरण 4:2, 12:32; 1 कुरिन्थियों 4:6; प्रकाशितवाक्य 22:18-19), अज्ञानता (मत्ती 22:29; होशे 4:6; यशायाह 1:2: □□□□; मैंने बच्चों का पालन-पोषण किया... परन्तु वे विद्रोह कर गए □□□□; 2 तीमुथियुस 2:15: □□□□; अपने आप को परमेश्वर के समक्ष स्वीकृत व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करने का भरसक प्रयास करो... सत्य के वचन को सही ढंग से संभालो □□□□;), परंपराएँ (मत्ती 15:6-9; मरकुस 7:6-9)।

बाइबल का ऐतिहासिक विकास और प्रामाणिक ग्रंथ

बाइबल का निर्माण ईश्वरीय विधान के अंतर्गत हुआ था, जिसमें पुराने नियम का प्रामाणिक ग्रंथ पहली शताब्दी ईस्वी के अंत तक और नए नियम का ग्रंथ चौथी शताब्दी ईस्वी के प्रारंभ तक स्थापित हो गया था।

- पुराना नियम: हिब्रू/अरामी भाषा में लिखा गया (1400-400 ईसा पूर्व), यहूदी धर्म द्वारा स्वीकृत।
- नया नियम: यूनानी भाषा में लिखा गया (पहली शताब्दी ईस्वी), यीशु के पुनरुत्थान के 45-60 वर्ष बाद पूरा हुआ। ईसाई धर्म, जो प्रारंभ में एक यहूदी संप्रदाय था, गैर-यहूदियों के धर्मांतरण और नए नियम को ईश्वरीय प्रेरणा से प्रेरित मानने के कारण स्वतंत्र हो गया (उदाहरण के लिए, 2 पतरस 3:15-16)।
- मानकीकरण: ग्रीक शब्द कैनन (मापने की छड़ी) से लिया गया है, जिसका अर्थ है प्रेरणा का निर्धारण। मुरटोरियन कैनन (लगभग 180 ईस्वी) प्रारंभिक है; पूर्ण नया नियम कैनन चौथी शताब्दी के प्रारंभ तक तैयार हो गया था।
- बाह्य स्रोत: टैसिटस, सुएटोनियस, थैलस, प्लिनी (रोमन), जोसेफस, रब्बीनिक (यहूदी), एनटी एपोक्रीफा, वैट्रिस्टिक्स (325 ईस्वी से पहले के 30,000 से अधिक उद्धरण), कुरान (सातवीं शताब्दी) मसीह/ईसाई धर्म की पुष्टि करते हैं, यह दर्शाता है कि बाइबिल एकमात्र स्रोत नहीं है।
- अधूरे प्रेरितिक लेख: सभी शामिल नहीं हैं (कुलुस्सियों 4:16: लाओदीकियाइयों को लिखा गया खोया हुआ पत्र; 1 कुरिन्थियों 5:9: पिछला पत्र; 2 थिस्सलनीकियों 3:17: प्रमाण)। नया नियम पर्याप्त है, संपूर्ण नहीं (यूहन्ना 20:30: □□□□; यीशु ने अनेक अन्य चमत्कार किए... जिनका वर्णन नहीं है □□□□; यूहन्ना 21:25: □□□□; संसार में उन पुस्तकों के लिए स्थान नहीं होगा □□□□;)।
- अपोक्रीफा/स्यूडेपिग्राफा: नए नियम के अपोक्रीफा (दूसरी-चौथी शताब्दी की अटकलें) और स्यूडेपिग्राफा (गलत तरीके से ईश्वरीय माने जाने वाले) ईश्वरीय रूप से प्रेरित नहीं हैं। पुराने नियम के अपोक्रीफा (200 ईसा पूर्व-100 ईस्वी, लैटिन बाइबिल में लगभग 400 ईस्वी, कैथोलिकों द्वारा प्रयुक्त, 16वीं शताब्दी के बाद कई प्रोटेस्टेंटों द्वारा अस्वीकृत) का ऐतिहासिक महत्व है (उदाहरण के लिए, 1 मैकाबीज़) लेकिन यह सर्वत्र ईश्वरीय रूप से प्रेरित नहीं है।
- पौलुस की प्रेरणा: 2 पतरस 3:15-16: □□□□; हमारे प्रिय भाई पौलुस ने... परमेश्वर द्वारा दी गई बुद्धि से आपको लिखा... जैसा कि अन्य शास्त्रों में लिखा गया है □□□□; 1 तीमुथियुस 5:18 में लूका 10:7 (□□□□; मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है □□□□;) को शास्त्र के रूप में उद्धृत किया गया है। 1 कुरिन्थियों 7:10,12 में पौलुस उन विषयों पर चर्चा करता है जिन पर यीशु ने चर्चा की थी/नहीं की थी, न कि राय और प्रेरणा के बीच अंतर करने पर।
- अन्य कोई प्रेरित ग्रंथ नहीं: गलातियों 1:6-9,12: कोई अन्य सुसमाचार नहीं; यहूदा 3: □□□□; वह विश्वास जो एक बार सर्वदा सौंपा गया था □□□□; 2 पतरस 1:3: □□□□; ईश्वरीय जीवन के लिए हमें जो कुछ भी चाहिए □□□□; इफिसियों 4:13: □□□□; विश्वास में एकता □□□□; 1 कुरिन्थियों 13:10-11: □□□□; जब पूर्णता आती है □□□□; अतिरिक्त ग्रंथ (जैसे, मॉर्मन की पुस्तक, दिव्य सिद्धांत, विज्ञान और स्वास्थ्य) निषिद्ध हैं (व्यवस्थाविवरण 4:2, 12:32; 1 कुरिन्थियों 4:6)।

सटीकता: डेड सी स्क्रॉल्स (200 ईसा पूर्व-68 ईस्वी, खोज 1947) में एस्तेर को छोड़कर पुराने नियम की सभी पुस्तकें शामिल हैं, जो इसके प्रसारण की पुष्टि करती हैं (उदाहरण के लिए, यशायाह 53 का स्क्रॉल बाद की पांडुलिपियों से मेल खाता है)। डेड सी स्क्रॉल्स से पहले, पुराने नियम की सबसे पुरानी पांडुलिपियाँ 10वीं शताब्दी ईस्वी की थीं।

संस्करण: केजेवी (1611) पुराना है, इसमें त्रुटियां थीं, इसमें 18वीं शताब्दी तक के एपोक्रीफा शामिल थे, और इसमें डीएसएस/पैपिरी का अभाव है। अध्ययन के लिए गतिशील समतुल्यता (एनआईवी, ईएसवी, होल्मन सीएसबी) को प्राथमिकता दें, सटीकता के लिए अधिक सटीक अनुवाद (एनआरएसवी, एनएसबी) का उपयोग करें। भावार्थ (लिविंग बाइबल, एनएलटी) से बचें और स्वतंत्र अनुवादों (एनईबी, जेरूसलम बाइबल, टीईवी) का सावधानीपूर्वक उपयोग करें।

पुराना नियम: जीवंत वचन, व्यवस्था और मसीह में उसकी पूर्ति

पुराने नियम में जीवित वचन; (दबार) निहित हैं, जिन्हें वर्गीकृत किया गया है और मसीह में पूरा किया गया है।

निर्गमन 19:3-6 (एनआईवी): "तुम स्वयं देख चुके हो कि मैंने मिस्र के साथ क्या किया, और कैसे मैंने तुम्हें बाज के पंखों पर उठाकर अपने पास लाया। अब यदि तुम मेरी आज्ञा का पूर्णतया पालन करोगे और मेरी वाचा को निभाओगे, तो सब जातियों में से तुम मेरी अनमोल संपत्ति बनोगे... एक याजकों का राज्य और एक पवित्र राष्ट्र।"

- स्पष्टीकरण: कानूनों ने इस्राएल को पुरोहितों और गवाहों के रूप में अलग किया।

निर्गमन 20:1-6 (एनआईवी): ; और परमेश्वर ने ये सब बातें कहीं: #39; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहीवा हूँ... तुम मेरे सामने किसी और देवता को न मानोगे। तुम अपने लिए कोई मूर्ति न बनाओगे...#39; ;

- स्पष्टीकरण: एकेश्वरवाद ने इज़राइल को विशिष्ट पहचान दी।

व्यवस्थाविवरण 4:5-8 (एनआईवी): ; इनका ध्यानपूर्वक पालन करो, क्योंकि इससे राष्ट्रों के सामने तुम्हारी बुद्धि और समझ प्रकट होगी, जो इन सभी नियमों के बारे में सुनकर कहेंगे, #39; निःसंदेह यह महान राष्ट्र एक बुद्धिमान और समझदार लोग हैं।#39; ;

- स्पष्टीकरण: कानून ईश्वर और इज़राइल के बीच के संबंध की गवाही देते थे।

1 कुरिन्थियों 10:11 (एनआईवी): ; ये बातें उनके साथ उदाहरण के रूप में घटीं और हमारे लिए चेतावनी के रूप में लिखी गईं, जिन पर युगों का अंत आ गया है।;

- स्पष्टीकरण: इस्राएली अनुभव ईसाइयों को पुरोहितों, उपासकों और गवाहों के रूप में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

कानून के प्रकार:

अनुष्ठानिक (पूजा, बलिदान): मसीह की छाया (इब्रानियों 10:1-4: ; व्यवस्था केवल एक छाया है... कभी भी... परिपूर्ण नहीं कर सकती ; लैव्यव्यवस्था 17:11: ; यह लहू ही है जो प्रायश्चित करता है ; इब्रानियों 9:1-10: मंदिर का डिज़ाइन रहस्योद्घाटन की आवश्यकता को दर्शाता है)।

नागरिक (सामाजिक व्यवस्था)।

नैतिक (हृदय की धार्मिकता)।

पूर्ति: कुलुस्सियों 2:16-17: कर्मकांडीय नियम छाया मात्र हैं; मसीह ही वास्तविकता है। मरकुस 12:28-34: यीशु ने व्यवस्था का सार परमेश्वर और पड़ोसी से प्रेम करना बताया।

नया नियम: प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के माध्यम से जीवंत वचन

ईश्वर ने प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के माध्यम से जीवित वचन; बोले ताकि पुराने नियम की व्याख्या की जा सके, यीशु के जीवन और शिक्षाओं को दर्ज किया जा सके और ईसाई सिद्धांतों की स्थापना की जा सके।

लूका 24:44-49 (एनआईवी): यीशु ने प्रेरितों के मन को शास्त्रों को समझने के लिए खोला, और उन्हें पश्चाताप और क्षमा का प्रचार करने का आदेश दिया।

प्रेरितों के काम 2:22-32 (एनआईवी): पतरस भजन संहिता 16:8-11 (दाऊद, लगभग 1000 ईसा पूर्व) का उद्धरण देता है: ; आप मुझे मृतकों के लोक में नहीं छोड़ेंगे... आपने मुझे जीवन के मार्ग दिखाए हैं, ; जो यीशु के पुनरुत्थान को सिद्ध करता है।

प्रेरितों के काम 3:17-23 (एनआईवी): पतरस व्यवस्थाविवरण 18:18-19 (मूसा, लगभग 1400 ईसा पूर्व) का हवाला देता है: ; मैं उनके लिए तुम्हारे जैसा एक नबी खड़ा करूँगा, ; यीशु की पहचान करते हुए।

प्रेरितों के काम 17:1-4 (एनआईवी): पौलुस पवित्रशास्त्र से सिद्ध करता है कि यीशु को दुख भोगना पड़ा और जी उठना पड़ा।

- इफिसियों 3:2-6 (एनआईवी): □□□□; मसीह का रहस्य... अब पवित्र आत्मा द्वारा परमेश्वर के पवित्र प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं पर प्रकट किया गया है। □□□□□;
 - स्पष्टीकरण: नए रहस्योद्घाटन से यह स्पष्ट होता है कि मसीह ने गैर-यहूदियों को भी अपने साथ शामिल किया था।
 - रोमियों 16:25-27 (एनआईवी): □□□□; वह रहस्य जो बहुत समय से छिपा हुआ था, अब भविष्यवाणियों के द्वारा प्रकट और ज्ञात किया गया है। □□□□□;
 - स्पष्टीकरण: पैगंबरों के लेख सभी राष्ट्रों के लिए लाभकारी होते हैं।
 - सुसमाचार:
 - मैथ्यू: यहूदी ईसाइयों के लिए, भविष्यवाणियों की पूर्ति पर जोर दिया गया।
 - मार्क: गैर-यहूदियों (रोमन) के लिए, संक्षिप्त।
 - लूका: यूनानियों के लिए, थियोफिलस को संबोधित करते हुए, निश्चितता सुनिश्चित करते हुए (लूका 1:1-4: □□□□□; ताकि तुम उन बातों की निश्चितता जान सको जो तुम्हें सिखाई गई हैं □□□□□);
 - जॉन: सामान्य श्रोतागण, पूरक विवरण (जॉन 20:30-31: □□□□□; ये इसलिए लिखे गए हैं ताकि तुम विश्वास करो □□□□□);
 - पत्र: फिलिप्पियों 3:1: पौलुस सुरक्षा के लिए लिखता है; 2 पतरस 3:1-2, 15-16: पतरस स्वस्थ सोच को प्रोत्साहित करने के लिए याद दिलाता है, पौलुस के पत्रों को पवित्रशास्त्र के साथ समतुल्य करता है।
- ऐतिहासिकता: नए नियम में सटीक धर्मनिरपेक्ष घटनाओं का वर्णन है, कथात्मक विवरण कालक्रम का समर्थन करते हैं, और प्रेरित सुसमाचारों/पत्रों को धर्मग्रंथ के रूप में देखते हैं।

परमेश्वर के वचन की विशेषताएं और प्रभाव

पवित्रशास्त्र में ईश्वर के वचन के गुण एक समान हैं।

विशेषता	मुख्य श्लोक	बाइबिल संबंधी व्याख्या
शाश्वत/अपरिवर्तनीय	यशायाह 40:8; मत्ती 24:35: □□□□□; मेरे वचन कभी नहीं मिटेंगे। □□□□□;	सृष्टि से भी अधिक समय तक कायम रहता है।
शक्तिशाली/प्रभावी	इब्रानियों 4:12; यशायाह 55:11; रोमियों 10:17: □□□□□; विश्वास संदेश सुनने से आता है... मसीह के विषय में वचन के द्वारा। □□□□□;	ईश्वर की इच्छा पूरी करता है; आस्था उत्पन्न करता है।
शुद्ध/सच्चा	भजन संहिता 12:6: □□□□□; यहोवा के वचन निर्दोष हैं □□□□□;; यूहन्ना 17:17: □□□□□; तेरा वचन सत्य है। □□□□□;	पवित्र करता है।
जान डालनेवाला	व्यवस्थाविवरण 8:3; यूहन्ना 6:63: □□□□□; जो वचन मैंने कहे हैं... वे आत्मा और जीवन से परिपूर्ण हैं □□□□□;; यूहन्ना 6:68: □□□□□; तुम्हारे पास अनन्त जीवन के वचन हैं। □□□□□;	आध्यात्मिक जीवन को बनाए रखता है।
आज्ञापालन का आह्वान	याकूब 1:22-25: □□□□□; जो लिखा है वही करो □□□□□;; 1 शमूएल 15:22-23: बलिदान से ऊपर आज्ञापालन।	कार्रवाई की मांग करता है; विद्रोह न्याय लाता है।
प्रसार/घोषणा	प्रेरितों 6:7: □□□□□; परमेश्वर का वचन फैल गया □□□□□;; प्रेरितों 12:24: □□□□□; फैलता रहा □□□□□;; मत्ती 13:1-23 (बोने वाला)।	चर्च का विस्तार होता है।

उद्धार/न्याय: यूहन्ना 12:48 (वचन न्याय करता है); रोमियों 1:16: □□□□□; सुसमाचार... परमेश्वर की शक्ति है जो उद्धार लाती है □□□□□;; इफिसियों 1:13: □□□□□; सत्य का संदेश, तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार □□□□□;; यूहन्ना 16:8: पाप का दोष सिद्ध करता है।

सामान्य प्रश्न, चुनौतियाँ और अनुप्रयोग

- अविश्वासी: पढ़ने (रोमियों 10:17; यूहन्ना 20:30-31) और आज्ञापालन (यूहन्ना 7:17: □□□□□; जो कोई परमेश्वर की इच्छा पूरी करना चाहेगा, उसे पता चल जाएगा □□□□□;) को प्रोत्साहित करें।
- चुनौतियाँ: प्रतिदिन उत्साहपूर्वक पढ़ें (जैसे, यूहन्ना का सुसमाचार); प्रश्न पूछें; प्रतिदिन अध्ययन करें (प्रेरितों के काम 17:11); लगन से काम करें (2 तीमुथियुस 2:15)।

सारांश

वचन (दबार, लोगोस, रहमा) सृजनात्मक वाणी से शुरू होकर यीशु के अवतार और फिर ईश्वरीय धर्मग्रंथों तक पहुँचता है (1 पतरस 1:23-25: □□□□; परमेश्वर के जीवित और शाश्वत वचन के द्वारा □□□□);)। यह परमेश्वर को प्रकट करता है, सहारा देता है, रूपांतरित करता है और आज्ञाकारिता तथा प्रचार की माँग करता है।